भाग ४ अध्याय १६ (क)

श्रमनीति

ट्रेड यूनियन आन्दोलन की भूमिका

और

दृष्टिकोण

—भारतीय मजदूर संघ

मूल्य : २५ पैसे

भाग ४ अध्याय १६ (क)

श्रमनीति

ट्रेड यूनियन आन्दोलन की भूमिका

और

दृष्टिकोण

--भारतीय मजदूर संघ

प्रस्तावना

राष्ट्रीय श्रम आयोग को भारतीय मजदूर संघ द्वारा प्रस्तुत किये गये "**Labour Policy**" नामक अंग्रेजी पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद है ।

हिन्दी में इस पुस्तक के सभी २० अध्याय अलग अलग पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किये गये हैं, साथ ही इस अध्याय क्र० १९ के दो भाग हैं ।

आपातकालीन स्थिति के अन्तर्गत कानपुर जिला कारागार की बन्दी अवधि में हमारे परम मित्र आई० आई० टी० कानपुर के प्राध्यापक डा० भूषणलाल धूपड़ के सहयोग से इस अध्याय का हिन्दी अनुवाद सम्भव हो सका है । मैं उनके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ ।

राम नरेश सिंह

ट्रेड यूनियन आन्दोलन की भूमिका

एक दृष्टिकोण

क्या वर्तमान ढांचे के अन्तर्गत ट्रेड यूनियन एक विशेष भूमिका निभा रही है ? वर्तमान काल में क्या यह परम आवश्यक है ?! हिटलर, मुसोलिनी, फ्रैन्को, सालाजार तथा माओ इसको आग्रहपूर्वक अस्वीकार करेंगे। विशेष प्रतिष्ठित लोग यह तर्क प्रस्तुत करेंगे कि उदारवादी अधिनायकवाद के अन्तर्गत श्रमिकों के हितों की सुरक्षा और बढ़ोत्तरी करने के लिये किसी भिन्न संगठन की जरूरत नहीं है। आज भी तन्जानिया के राष्ट्रपति श्री नेअरे [Nyeyere] ने अपने आपको श्रमिकों के संरक्षक की भूमिका निभाने की घोषणा की है तथा अपने देश में सभी ट्रेड यूनियनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है और सभी कारखाने के श्रमिकों को उनके द्वारा बनाई हुई एक मात्र राष्ट्रीय श्रमिक संगठन में सम्मिलित होने के लिए बाध्य किया गया है। इस एक मात्र श्रमिक संगठन को भिन्न-भिन्न उद्योगों के अनुसार विभाजित किया गया है और वे यह निश्चित कर लिये हैं कि यह संगठन उनके निर्देशों को ईमानदारी से निभाये। इस नई व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रपति के संरक्षण में श्रमिकों के भाग्य में निश्चित रूप से लाभ पहुंचा है। कुवैत जो कि एक छोटा सा देश है और जहाँ प्रति व्यक्ति आय काफी ऊंची है, उसने अपने श्रमिकों को अच्छी आवास व्यवस्था, सामाजिक सुरक्षा एवं उच्च वेतन दिया है। यद्यपि वहाँ के श्रमिक ठीक ढंग से संगठित नहीं है तिस पर भी उक्त दोनों देशों में सजग श्रमिक अपने स्थायी उत्थान के लिए इस सरकारी कृपा रूपी निर्भर करने वाली पद्धति को स्वीकार नहीं करते। वे अपने स्वावलम्बन को यथा ट्रेड यूनियन के द्वारा अपने अधिकार को प्रगट करने वाली पद्धति को छोड़ना बहुत हानिकारक समझते हैं, क्योंकि आत्म निर्भरता की कोई और पूरकता नहीं होती। यदि किसी देश में श्रमिक सत्ता में आ जाय, तो भी वे अपने संगठन को तोड़ देने को सहन नहीं करेंगे, ऐसी दशा में भी जिसमें श्रमिक हित, जिनकी सरकार द्वारा सुरक्षा होगी तथा श्रमिक संगठनों के द्वारा हित मिलेंगे, उसके समकक्ष नहीं होंगे। ट्रेड यूनियनों को एक विशेष भूमिका अदा करनी ही है।

भारतवर्ष में ट्रेड यूनियन गतिविधियों की भूमिका के बारे में कोई एक मत दिखाई नहीं देता । यह बात सही है कि एटुक, जिसका मार्क्सवादी लेनिनवादी स्वरूप है, जब से साम्यवादियों के आधिपत्य में आयी, ट्रेड यूनियन

गतिविधियों को साम्यवादी विचारधारा के अन्तर्गत व्यवहार कर रही है। यद्यपि इस दृष्टिकोण ने एक तात्विक एकीकरण प्रगट किया है, और अब तक वह संगठन का केन्द्र बना रहा है किन्तु अब यही उसके संगठन की कमजोरी हो गयी है उस समय से जब से साम्यवादी दल में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की व्याख्या पर मतभेद पैदा हो गया। ध्यान रहे कि अभी दोनों पक्ष एक ही संगठन के अन्तर्गत काम कर रहे हैं, अब ऐसा आभास होता है कि शीघ्र ही एक अलग वामपन्थी ट्रेड यूनियन केन्द्र की शुरुआत होगी। (नोट-अब CITU (सीटू) नामक अलग संगठन बन चुका है) साम्यवादी दल द्वारा राज्य स्तर पर सत्ता प्राप्त करना, जबकि केन्द्र पर उनकी सत्ता नहीं है ने उन्हें और भी घाटे में डाल दिया है। ऐसा होने के कारण साम्यवादी दल को एक विरोधी दल के रूप में काम करना पड़ रहा है। जब वह पूरे देश की राज्य सत्ता को हथिया लेगा तभी वह शीघ्र और उग्र अधिनायकवाद के अन्तर्गत सरकार की भूमिका को बदल सकता है। ऊपर लिखी गयी परिस्थिति के कारण दल को क्रान्ति के पूर्व और क्रान्ति के पश्चात् भूमिका अदा करनी पड़ रही है यही उसकी कष्टप्रद एवं विरोधाभासी भूमिका है। केरल में सी० पी० एम० द्वारा नियंत्रित राज्य में श्रम विभाग द्वारा जो ज्ञापन राष्ट्रीय श्रम आयोग को दिया गया है कि एटुक द्वारा वर्तमान प्रस्ताव में की गयी भर्त्सना इसी संदर्भ में देखने योग्य है। इनटुक जो कि गान्धी जी के द्वारा दिये गये राष्ट्रीय विचार धारा पर आधारित मजदूर महाजन लाभ के लिए बना, ने अपने आपको कांग्रेस संगठन एवं सरकार के साथ एक रूप करके अपनी आत्मा को खो बैठा है जिसके फलस्वरुप कांग्रेस के अन्दर के मतभेद इनटुक के संगठनात्मक ढांचे में प्रगट होते हैं। इन सब कारणों ने इसको कमजोर और भिन्न-भिन्न स्तरों पर विभाजित कर दिया हैं तथा आज यह प्रगट होना भी कठिन हो गया है कि इसकी सदस्य संख्या कितनी है ? हिन्द मजदूर सभा की शाखायें अपने में बहुत सशक्त हैं पर सामूहिक दृष्टि से कमजोर हैं क्योंकि इन यूनियनों के नेता प्रजातांत्रिक ट्रेड यूनियनिज्म के सिद्धान्तों को ईमानदारी से निभाते तो हैं, परन्तु ऐसा करते हुए वे राष्ट्रीय उत्थान में केन्द्रीय श्रम संगठन तथा सामूहिक श्रम कल्याण को प्राप्त करने की भूमिका के बारे में कम ध्यान देते हैं। युटुक जो अपने आपको पूर्णतः अराजनीतिक स्वरूप को प्रगट करता हैं वस्तुतः आर० एस० पी० व बोलशेविक पार्टी द्वारा निर्देशित होती थी, परन्तु दोनों दलों के अन्दर भीषण फूट के कारण इसे काफी हानि हुई है और आज वह बहुत पीछे हो गयी हैं। हिन्द मजदूर पंचायत ही एक ऐसा संगठन है जो बड़े दावे से घोषणा करता है कि ट्रेड यूनियन को एक राजनीतिक दल की शाखा के रूप में काम करना चाहिए और इस व्यवस्था से यूनियन एवं दल को

बहुत लाभ होगा (नोट: अब हिन्द मजदूर पंचायत कई भागों में बट जाने के कारण छिन्न-भिन्न व समाप्त प्राय: हो चुका है।) अखिल भारतीय सिद्धार्थ श्रमिक संघ अभी प्रारम्भिक स्थिति में है और रिपब्लिकन पार्टी ही एक मात्र खेतिहर श्रमिकों का अ० भा० संगठन के रूप को प्रगट करती हैं। दल की उद्योगों तथा कृषि क्षेत्र में पहले से ही सम्भावित सदस्यता बनी हुई है और वे श्रम-क्षेत्र में समर्पित नेताओं की इन्तजारी कर रहे हैं। डी० एम० के० ने भी श्रम क्षेत्र में बड़े जोर शोर से प्रवेश किया है और इसके ट्रेड यूनियन नेता जो कि इस आन्दोलन में नये हैं तथा अपने राज्य तमिलनाडु तक ही सीमित हैं और राज्य की आर्थिक समस्याओं को हल करने हेतु उपयुक्त पद्धतियों को अपनाने में इमानदार हैं। लाल निशान गुट अथवा पीजेन्ट्स एण्ड वर्कर्स पार्टी के श्रमिक संगठन केवल स्थानीय स्तर पर ही प्रभावी हैं और कोई राष्ट्रीय भूमिका अथवा विचार रखते की स्थिति नहीं रखने और वे दावा भी नहीं करते तथा शिवसेना से सम्बन्धित भारतीय कामगार सेना की भी यही स्थिति है और इसके सिद्धान्त और नीतियों की घोषणा करना शेष है। संगठित मजदूरों का एक बहुत बड़ा भाग भिन्न भिन्न यूनियनों व औद्योगिक संस्थाओं के अन्तर्गत है जिनका स्वरूप स्वतंत्र है तथा किसी भी अ० भा० श्रमिक संगठन से सम्बद्ध नहीं हैं। यद्यपि हर एक को उसकी अपनी उपयोगिता के अन्तर्गत तौलना होगा पर आम तौर से यह कहा जा सकता है कि इन संगठनों का ट्रेड यूनियन आन्दोलन की भूमिका के लिये कोई विशेष विचारधारा का आधार नहीं है। इन्डियन फैडरेशन आफ फ्री ट्रेड यूनियन्स इसी श्रेणी की है और यद्यपि इसने अपनी सुविधा हेतु अर्न्त-राष्ट्रीय श्रम संस्था 'इन्टरनेशनल फेडरेशन आफ क्रिश्चियन ट्रेड यूनियन' से वार्तालाप की थी, ध्यान रहे कि अब 'क्रिश्चियन' शब्द की परिभाषा 'विलीवर' (आस्तिक) शब्द से कर दी गई है। अ० भा० सेडूलकास्ट एवं सेंडूल ट्राइब्स वर्कर्स वेलफेयर एशोसियेशन ने अपने उद्देश्यों की सफलता के लिये श्री जगजीवन राम का योग्य नेतृत्व प्राप्त किया हैं किन्तु किसी भी रूप में इसे ट्रेड यूनियन संगठन नहीं कहा जा सकता। साम्यवादियों द्वारा प्रभावित किसान सभा ने खेती-हर मजदूरों के हितों की सुरक्षा के लिये कई आन्दोलन किये परन्तु इसने अपने आपको नियमित रूप से चलने वाली ट्रेड यूनियन नहीं कहा। इस हेतु यह कहा जा सकता है कि हमारे देश में ट्रेड यूनियन आन्दोलन की भूमिका किसी एकमत को प्रगट नहीं करती।

विश्वव्यापी स्तर पर ट्रेड यूनियन आन्दोलन इधर कुछ काल से एक संस्था के रूप में उत्पन्न हुयी है। यह आन्दोलन उद्योगीकरण के प्रारम्भ में एक विरोधी संगठन के रूप में शुरु हुआ और मुख्यत: सफल बुर्जुवा एवं प्लोटोक्रैट (व्यापारियों

की सरकार) के नियंत्रण के विरोध में विद्रोह के रूप में खड़ा हुआ परन्तु यह आन्दोलन अब इस ओर गतिशील हो रहा है कि वह एक विशेष भूमिका निभा सके। अब ऐसे संगठन हैं, जो अपने आपको निर्णय लेने वाली पद्धति से, जानकारी इकठ्ठा करने के उद्देश्य से अथवा परामर्श देने वाली भूमिका से सामने आ रहे हैं। कुछ और संगठन भी हैं, जो प्रशासन में भाग लेते हैं अथवा लाभदायी रचनात्मक सहयोग देते हैं। अब ऐसा भी एक चित्र खड़ा हुआ हैं, जिसके अर्न्तगत उद्योग का सामूहिक प्रशासन एवं नियंत्रण ट्रेड यूनियन द्वारा किया जा रहा है। ट्रेड यूनियन आन्दोलन से लिये गये प्रमुख व्यक्तियों द्वारा राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था के सम्पूर्ण प्रशासन की कल्पना अब स्वप्न मात्र नहीं रह गयी हैं। राष्ट्रीय उत्थान की गति शीलता में ट्रेड यूनियन आन्दोलन की सही भूमिका को समझने के लिए यह लाभ दायक रहेगा कि हम विश्वव्यापी श्रम संगठनों की भूमिका को भी अपने सम्मुख रखें।

निष्कर्ष

भिन्न भिन्न देशों के अध्ययन से निम्नलिखित तथ्यों का निष्कर्ष निकाला जा सकता है:—

१ यद्यपि विश्व की ट्रेड यूनियन संगठनों के कोई व्यापक ढाँचे की समानता मालूम नहीं होती तो भी ट्रेड यूनियन आन्दोलन की भूमिका भिन्न देशों में भिन्न भिन्न है।

२ वर्तमान सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के ऐतिहासिक उत्थान और ढाँचे की प्रक्रियाओं में इस विभिन्नता का कारण है।

३ इन दोनों ही पक्षों में हिन्दुस्तान की अपनी विचित्र विशेषतायें हैं, क्योंकि हमारे यहां बहुत अधिक मात्रा में और विभिन्नता के बहुमूल्य अनुभवों का परम्परागत भंडार है, आत्मा की अनुभूति से ही ये सभी जानकारियाँ मिली हुई हैं जिनका स्वरूप अनोखा और विश्वव्यापी है।

४ यद्यपि हर एक देश हमें एक या दूसरे प्रकार से शिक्षा एवं चेतावनी देता है तो भी हमें अपने ढाँचे का स्वयं विकास करना होगा, जो हमारी परम्परा व परिस्थितियों के अनुकूल हो।

५ कम से कम कुछ देशों में ट्रेड यूनियन आन्दोलन ने योजना के बनाने और कार्यान्वित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। ऐसा कोई कारण नहीं है कि भारत वर्ष में भी वे योजना के बनाने और कार्यान्वित करने में इस भूमिका को सक्रिय और निर्णयात्मक ढंग से न निभा पायें।

६ इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय सम्पन्नता में एक महत्वपूर्ण योगदान देने के लिये यह अनिवार्य है कि ट्रेड यूनियन आन्दोलन को सभी प्रकार के इज्म (वाद) की गुलामी से मुक्त कराया जाये। दृष्टिकोण और अपनाये जाने वाली पद्धति व्यावहारिक होनी चाहिए न कि किसी विशेष मत का अन्धानुकरण।

७ देश में राष्ट्रभक्ति के सशक्त भाव की अनुपस्थिति में कोई भी कानूनी कार्य वाही अथवा ढाँचे की पद्धति परिणाम नहीं दे सकती। अन्तरराष्ट्रवाद के स्थान पर राष्ट्रवाद ही कठिन परिश्रम करने और अधिकतम त्याग करने का एक सही प्रेरणा केन्द्र है। औद्योगिक प्रजातांत्रिक योजना उसी हद तक सफल हो सकती है, जिस हद तक नियोजक कर्मचारी और सरकार अपने आपको सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ एकात्म कर सके। राष्ट्रीय एकात्मता की यही मनोभूमिका औद्योगिक सम्बन्धों के भिन्न भिन्न पक्षों को ठीक प्रकार से मोड़ सकती है।

जनसंख्या के सभी अंगों, जिसमें श्रमिक भी शामिल है, की सुस्ती को तभी दूर किया जा सकता हैं, जब उसके सम्मुख एक महान उद्देश्य प्रस्तुत हो और उसे एक राष्ट्रीय कौशल और ज्ञान की जागृति की स्थिति को प्राप्त करने की भावना से प्रेरित किया जाय। हर एक नागरिक को राष्ट्रोत्थान में उसकी भूमिका के बारे में अवगत कराया जाय। कौशल और ज्ञान की जागृति की स्थिति के लिये ठोस नींव निर्माण की जाय। प्रखर सिद्धान्तवादिता की ठोस नींव निर्माण की जाये न कि क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति का साधन।

भारतीय मजदूर संघ का यह विचार है कि देश में ट्रेड यूनियन आन्दोलन की भूमिका को राष्ट्र की शेष समस्याओं से भिन्न करके नहीं देखा जा सकता। राष्ट्रीय उत्थान की सामूहिक योजना में इसे एक सामूहिक रूप के अर्न्तगत मानकर ही विचार करना है। कुछ नवीन विचार जो कि कष्टदायक हो सकते है, का इस सन्दर्भ में प्रस्तुत करना जरूरी है। परिवर्तन विरोध और क्राँतिकारी परिवर्तन के नाम पर दुस्साहस वाली गतिविधियों दोनों से हमें निष्पक्ष रहना चाहिये। हमें सभी देशों के अनुभवों व प्रयोगों से लाभ उठाना चाहिये, परन्तु उनका अन्ध विश्वास से नकल नही करना चाहिये। हमें अपने प्राचीन काल के अनुभवों, जिन पर काफी मात्रा में पर्दा पड़ा हुआ है, की विशेषताओं व कमजोरियों को व्यापक रुप से खोजना चाहिये, परन्तु यह खोजते समय अपनी वर्तमान दुर्दशा और भविष्य की आकांक्षाओं को आँख से ओझल नहीं होने देना चाहिये। जनसंख्या के सभी अंगों में हमें राष्ट्र के हितों के लिए अहिर्निश सेवा भाव (Missionary Jeal) के जोश को पैदा करना चाहिये, ताकि राष्ट्र के अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचने के सामूहिक प्रयत्नों में कन्धे से कन्धा लगाकर सब खड़े हो सकें।

एकात्मभाव की प्राकृतिकरूप से उत्पन्न होने वाली वाणी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर ने राष्ट्रोत्थान की प्रक्रिया को बतलाते हुये कहा है "जब एक बार एकात्मभाव की जीवन्त प्रवाह हमारे राष्ट्रपुरुष के सभी अंगों में आजादी से बहने लगेगी तब हमारे राष्ट्रीय जीवन के भिन्न भिन्न अंग सक्रिय और एकात्मरूप से सम्पूर्ण राष्ट्र के कल्याण हेतु क्रिया करना शुरु कर देंगे।

इस प्रकार जीवित व प्रगति करता हुआ समाज पुरानी पद्धतियों व ढाचों के असंख्य स्वरुपों में से उनको जो अनिवार्य है और जो प्रगति के पथ पर चलने के लिये लाभदायक है, बनाये रखेगा और उन सब को उठाकर फेंक देगा व परित्याग कर देगा जिन्होंने अपनी उपयोगिता पूरी करली है और इनके रिक्त स्थानों पर नई पद्धतियों का विकास करेगा। किसी को पुरानी व्यवस्था के चले जाने के ऊपर आंसू बहाने की जरूरत नहीं है और न नवीन व्यवस्था के स्वागत से भागना ही हैं। ये सभी जीवित और प्रगतिशील जीव प्राणियों की प्रकृति है जब एक पेड़ बढ़ता हैं तो पके हुये पत्ते और सूखी टहनियाँ गिर जाती हैं और उनके स्थान पर नये पल्लव विकास हेतु रास्ता बनाते हैं। प्रमुख बात जो अपने सम्मुख रखना चाहिये वह यह कि एकात्मता का जीवसार हमारे सामाजिक ढाँचे के हर हिस्से में धीमे-धीमे पहुंचता है। हर एक पद्धति और ढाँचा जीवित रहेगा अथवा बदलेगा या सम्पूर्ण रूप से लुप्त हो जायगा यह इस बात पर निर्भर करता हैं कि जीवसार उसके पालन पोषण के लिये पहुंचेगा अथवा नहीं पहुंचेगा। अतः सभी प्रकार की पद्धतियों के भविष्य के बारे में वर्तमान परिस्थिति को सामने रखकर बहस करना व्यर्थ हैं। काल की यह सर्वोच्च आवाज हैं कि एकात्मभाव को जीवित किया जाय और साथ ही साथ अपने समाज के जीवनोद्देश्यों की चेतना पुनः पैदा की जाय, शेष सभी बातें स्वयं ही अपनी चिन्ता कर लेंगी।'

श्री गुरु जी की यह टिप्पणी विशेष स्थान रखती है, जब हम इस तथ्य को देखते हैं कि विश्वव्यापी धर्म और उसके अधिष्ठान 'भारतीय राष्ट्रवाद' का यह ऋषि अपने संगठन द्वारा राष्ट्र को स्वस्थ बनाने और मानव की प्रतिष्ठा के लिये अनिवार्य सभी विशेषताओं व गुणों को बनाये रखने और आगे बढ़ाने के लिये सतत प्रयत्न कर रहा है, जैसा कि ऋषि मनु ने प्रलय काल में एक नैय्या में बैठे हुये सभी प्रकार के जीव प्राणियों को बचाने का प्रयत्न किया था।

अब समय आ गया कि ऊपर लिखी हुयी टिप्पणी की अन्तरात्मा व भावना ध्यान में रखकर भारत में ट्रेड-यूनियन आन्दोलन की भूमिका के बारे में हम सब लोग इकठ्ठा होकर विचार करें। ❀